Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

શ્રુતસાગર | શ્રુતસાગર

SHRUTSAGAR (MONTHLY)

August-2020, Volume : 07, Issue : 03, Annual Subscription Rs. 150/- Price Per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

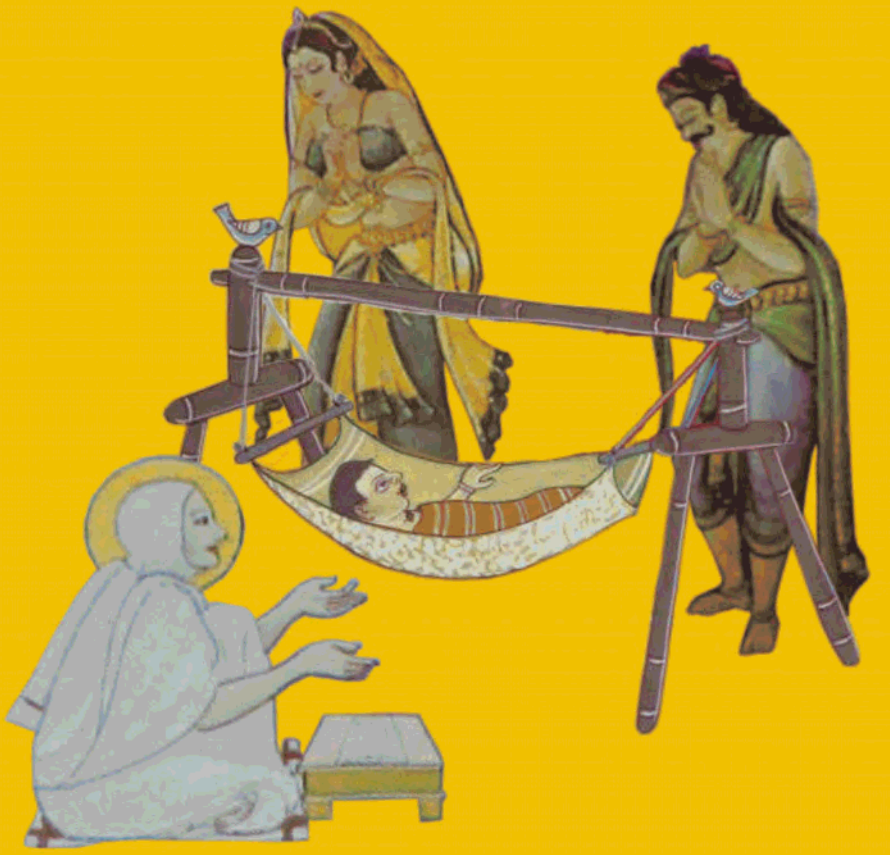

'अढार नातरा विवाहलो' लेख का प्रतिक चित्र

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

For Private and Personal Use Only

पूज्य राष्ट्रसन्त श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की निश्रा में कोबातीर्थ में विश्वशान्ति हेतु बृहत् शान्तिधारा अभिषेक का आयोजन

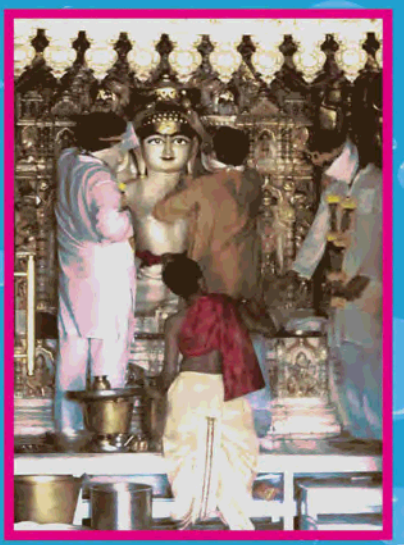

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-७, अंक-३, कुल अंक-७५, अगस्त-२०२०

Year-7, Issue-3, Total Issue-75, August-2020

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖

हिरेन किशोरभाई दोशी

❖ सह संपादक ❖

रामप्रकाश झा

❖ संपादन निर्देशक ❖

गजेन्द्रभाई शाह

❖ संपादन सहयोगी ❖

राहुल आर. त्रिवेदी

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ अगस्त, २०२०, वि. सं. २०७६, श्रावण कृष्ण पक्ष-११

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२३२६

फोन नं. (079) 23276204, 205, 252 फैक्स : (079) 23276249, वॉट्स-एप 7575001081

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	रामप्रकाश झा	५
२.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	६
३.	Awakening	Acharya Padmasagarsuri	८
४.	अढार नातरानो विवाहलो	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	९
५.	दयाछत्रीसी	हिरेनाबेन अजमेरा	१८
६.	योगविद्यानुं अजवाळुं : एक विरल घटना	पद्मश्री डॉ. कुमारपाल देसाई	२३
७.	प्राचीन पाण्डुलिपियों की संरक्षण विधि	राहुल आर. त्रिवेदी	२६
८.	पुस्तक समीक्षा	डॉ. हेमंतकुमार	२९
९.	चातुर्मास सूचि	-	३१
१०.	समाचार सार	-	३४

जीवडा कारणि ठीकरी, साचउ कुंभ म फोडि।
काणी कउडी कारणइ, हारि म रत्नह कोडि॥६६॥

प्रत क्र. १३१०७१

भावार्थ- हे जीव ! एक ठीकरी के लिए नये घड़े को मत फोड़, एक फूटी कौड़ी के लिए करोड़ों के रत्न को मत हार। अर्थात् अमूल्य मानवभव को तुच्छ सांसारिक सुखों के पीछे मत गँवा।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

रामप्रकाश झा

श्रुतसागर का यह नवीन अंक आपके करकमलों में समर्पित करते हुए हमें असीम प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। इस अंक में योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजी की अमृतमयी वाणी के अतिरिक्त दो अप्रकाशित कृतियों का प्रकाशन किया जा रहा है।

सर्वप्रथम **"गुरुवाणी"** शीर्षक के अन्तर्गत आत्मज्ञानी महापुरुषों के कर्त्तव्य के विषय में बतलाया गया है कि उन्हें सर्वजीव के प्रति समभाव रखकर किसी भी गुणस्थानक में रहे हुए जीव को मोक्षमार्ग का अधिकारी मानते हुए उसके प्रति कल्याण की भावना रखनी चाहिए। द्वितीय लेख राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी के प्रवचनों की पुस्तक **'Awakening'** से क्रमशः संकलित किया गया है, जिसमें समाज के निर्धन व उपेक्षित वर्ग हेतु धनिकों के धन का सदुपयोग किए जाने का उपदेश दिया गया है।

अप्रकाशित कृति प्रकाशन के क्रम में सर्वप्रथम पूज्य गणिवर्य श्री सुयशचन्द्र-सुजशचन्द्रविजयजी म. सा. के द्वारा संपादित **"अढार नातरा विवाहलो"** का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत १५वीं शताब्दी में हुए आचार्य हीरानंदसूरिजी ने सांसारिक सम्बन्धों के जाल में फँसे हुए जीव का वर्णन करते हुए १८ प्रकार के सम्बन्धों का उल्लेख किया है। द्वितीय कृति के रूप में शहरशाखा पालडी में कार्यरत श्रीमती हिरेनाबेन अजमेरा के द्वारा सम्पादित **"दयाछत्रीसी"** प्रकाशित की जा रही है। इस कृति के कर्त्ता साधुरंग मुनि ने शास्त्रों में वर्णित विविध प्रसंगों का दृष्टान्त देते हुए जयणा का पालन और सर्वजीव के प्रति दयाभाव रखने का उपदेश दिया है।

पुनःप्रकाशन श्रेणी के स्थान पर सरकारश्री द्वारा प्रस्थापित विश्व योग दिवस के उपलक्ष्य में इस अंक में पद्मश्री डॉ. कुमारपाल देसाई के द्वारा लिखित **"योगविद्यानुं अजवाळुं : एक विरल घटना"** लेख का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत "भावनगर समाचार" साप्ताहिक अंक के सम्पादक श्री जयंतीलाल मोरारजी के द्वारा वर्षों पूर्व आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी की योगसाधना के प्रत्यक्ष अनुभव का आलेखन किया गया है।

गतांक से जारी **"पाण्डुलिपि संरक्षण विधि"** शीर्षक के अन्तर्गत ज्ञानमंदिर के पं. श्री राहुलभाई त्रिवेदी के द्वारा हस्तप्रतों के उपचारात्मक संरक्षण विधि पर प्रकाश डालते हुए इस कार्य हेतु उपयोगी वस्तुओं की सूची दी गई है।

सीमा स्तंभरूप पुस्तक समीक्षा के अन्तर्गत इस अंक में श्रीकान्तिसागरजी द्वारा रचित, डॉ. लक्ष्मीचन्द्र जैन के द्वारा सम्पादित तथा श्री भूषण शाह के द्वारा पुनः सम्पादित **"प्राचीन जैन स्मारकों का रहस्य"** पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। इस ग्रन्थ में प्राचीन खण्डहरों, स्मारकों तथा जीर्णशीर्ण जिनमन्दिरों के ऐतिहासिक महत्त्व के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

इस अंक में संसार की असारता, समभाव, अहिंसा व योग जैसे विषयों से परिपूर्ण सामग्री आपकी आत्म भावना को पवित्र करे और पर्युषणपर्व की आराधना में आपको बल मिले यही शुभकामना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी

जैनदृष्टिए आत्मानुं अनन्त वर्तुल

आवी आत्मज्ञानीनी दृष्टि थवाथी ते ज्ञानादिनी अपेक्षाए विशाल धर्मतत्त्वना वर्तुलवाळो बने छे। अर्थात् ते धर्मनी बाबतमां सर्व धर्म बंदरनो धर्म व्यापार दर्शावनारो बनी शके छे। कारण के ते द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावथी अनेक जीवोने प्रत्येक जीवनी योग्यता प्रमाणे धर्म मार्गने बतावनारो थाय छे, तेथी तेवो आत्मज्ञानी आखी दुनियामां सर्व जीवोने गमे ते स्थितिमां जे जे अंशे धर्म सधाय ते ते अंशे दर्शावी विश्वमां भिन्न भिन्न देशोमां वसनार भिन्न भिन्न जातीय मनुष्यो पैकी कोइने सामान्य धर्मना अंशरूप धर्मने बतावीने, अथवा कोइने तेना करतां विशेष प्रकारे धर्म बतावीने, रागादि दोषोना क्षयपूर्वक आत्माना गुणोनी आविर्भावता प्रति आकर्षक अनेक नयसापेक्षबोधवाळो जैन धर्म छे; (तेवुं समजावी शके छे) अतएव तेनी महत्तानी जेटली प्रशंसा करीए तेटली न्यून छे।

एक पर्वतना अमुक शिखर पर चढवाने माटे करोडो पगथीयां होय अने पगथीए पगथीए भिन्न भिन्न दीवाओनो सरवाळो करोडो जेटलो थाय। प्रत्येक पगथीया पर चढनार वा पगथीयाने अवलंबी उभो रहेनार शिखरनी सन्मुख गमन करनारो गणी शकाय। तद्वत् आत्माना सिद्धत्त्व पर्यायने प्राप्त करवाने माटे असंख्ययोगरूप असंख्य पगथीयां छे। गुणस्थानकना नामथी निर्देश करायेलां सर्व गुणस्थानको सिद्धत्त्व पर्यायरूप मोक्षदशानां पगथीयां छे, तेथी गुणस्थानको पैकी गमे ते गुणस्थानकमां रहेनार जीव मोक्षना पगथीयामां रहेलो गणाय। अतएव कोइपण गुणस्थानकमां रहेनार जीव प्रति तिरस्कार, द्वेषदृष्टि तो धारण करवानी जरूर नथी एम जैनधर्म शिखवे छे।

पोताना करतां उच्च गुणस्थानकरूप पगथीया पर रहेला जीवोमां पोताना करतां विशेषगुणो होय अने पोताना करतां नीचेना पगथीयाओमां रहेला जीवोमां पोताना करतां अल्पगुणो अने विशेष दुर्गुणो होय तेथी तेओना पर कदी तिरस्कारनी दृष्टि न उद्भववी जोइए। आपणे पण हवे कोइ वखत ठेठ नीचे पगथीया पर हता। त्यांथी हळवे हळवे अन्योनी साहाय्यथी आगळ चढेला छीए।

विचार करावनार अने सर्व जीवोना श्रेयमां यथाशक्ति भाग लेवानो विचार करावनार अने सर्व जीवोनी सेवामां उदारभावथी प्रवर्त्तावनार जैनधर्म होवाथी खरेखर जैनधर्म-जगतमां महान् धर्म गणाय छे। परस्पर मतभेदथी भिन्न अने परस्पर एक बीजाने अधर्मी माननार एवा भिन्न भिन्न धार्मिक मनुष्यो के जे एक बीजाने शत्रु मानीने एक बीजानुं बुरूं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करवा अने परस्पर नाश करवा उद्यत थएला होय छे। तेओना उपर पण करुणा, मैत्री अने **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** एवो भाव रखावीने परस्पर धर्म मतभेदे युद्ध करी लडी मरता जीवो पर आत्मभाव राखीने तेओना विचारोमां सुधारो वधारो करावीने तेओने साची शान्ति समर्पनार जैनधर्मनो मुख्य उद्देश होवाथी विश्व मनुष्योना कल्याणार्थे, सर्वजीवोनी दयार्थे, विश्वमां सर्वत्र शांति प्रसरावका अर्थे, जैनधर्मनो आखी दुनियामां सर्वत्र फेलावो करवानी जरूर छे। सूक्ष्मज्ञान-दृष्टिधारक आत्मज्ञानिओ जैनधर्मना अनन्त धर्मवर्तुलना महत्त्वने अवबोधीने जैनधर्मनो प्रचार करवा प्रयत्न करे छे।

क्रमशः

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ – ६८६-६८७

श्रुतसागर अप्रैल-मई संयुक्तांक २०२० में '१२ व्रत पर आधारित ३ अप्रगट कृतिओ' लेख की क्षतिपूर्ति

क्रम	पृष्ठ सं.	गाथा	अशुद्धपाठ	शुद्धपाठ
१	३२	४	गोगावलि	गोगा वलि
२	३२	६	जाव जीव	जावजीव
३	३२	१२	टकामइं	टका मइं
४	३३	१३	साहम्मीजी माडिवा	साहम्मी जीमाडिवा
५	३३	१३	छतीस कति	छती सकति
६	३३	१५	प्री	प्री[प्राणी]
७	३३	१५	भवजलतारणी हारे	भवजलतारणीहारे
८	३३	२४	बे करओ	बेकरओ
९	३४	३४(३५)	जूतीका	जूती का
१०	३४	३५(३६)	वेसतीस दरीयाइं तिम,	वेस तीस दरीयाइं, तिम
११	३५	३६(३७)	ते मटसरीया	तेम टसरीया
१२	३५	३६(३७)	सीरखत लोई	सीरख तलोई
१३	३५	३८(३९)	मुझ नइ	मुझनइ
१४	३५	३९(४०)	चउथोवणि	चउ धोवणि
१५	३५	४०(४१)	खारिक पिसता टोपरा, चारोली नीकी	खारिक पिसता टोपरा चारोली नीकी,
१६	३५	४२(४४)	सासाकुली	सा साकुली

अनुसंधान पृष्ठ २८ पर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

The fourth means is wealth. It is wrong to use wealth as a means to fulfil sensual desires and to accumulate things that gratify our passions. The right way to use wealth is to utilize it for the welfare of others, to help others; to secure medical treatment for the sick and the ailing; to establish charitable institutions; to dig wells; to provide water to the thirsty; to grow gardens, or make roads, to establish free boarding-homes; to start schools, to give scholarships to deserving students; to encourage competitions; to give prizes and rewards; to publish sacred books and to help the needy. Oliver Goldsmith was a great English poet and doctor and he used to treat patients. One day, a lady took him to her house to give treatment to her husband who was ill.

The poet did not take much time to realize that his illness was the result of his mental worry caused by his poverty.

Saying that he would send a packet of medicine immediately and that the medicine would surely cure his illness he went home.

Accordingly, the poet sent a packet to the lady and when she opened it she saw ten sovereigns in it. The very sight of the sovereigns cured her husband of his illness. The husband and wife felt extremely grateful to the poet.

Goldsmith was extremely generous. He gave away to the needy whatever he had with him without caring for his necessity. Goldsmith's only luxury was his charity.

(continue...)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अढार नातरानो विवाहलो

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

संसारमां फसायेला जीवोने सम्यक् बोध न मळे त्यां सुधी तेओ भवभ्रमण कर्या करे छे। तेमां क्यारेक पुत्र रूपे, तो क्यारेक माता रूपे, क्यारेक पति के पत्नी रूपे, तो वळी क्यारेक भाई के बहेन रूपे शरीरो(स्वरूपो)नुं परिवर्तन करता करता पोतानी भव परंपरामां अन्य जीवो साथे जोडाई संबंधोनुं नवुं जाळुं सर्जे छे। वळी पाछा ते ज जाळामां अन्य जीवो साथे राग-द्वेषादि कषायो करी करीने पोताना संसार-परिभ्रमण काळने वधुने वधु लंबावे छे।

प्रस्तुत कृतिगत कथा आवा ज संबंधोना जाळाने वर्णवती खूब ज सुंदर लघु कथा छे। अहीं कविए मथुरानी वेश्या कुबेरसेनाना जीवन चरित्रने वर्णवता, तेना द्वारा व्यक्ति विशेष साथे जाणता के अजाणता बंधाता संबंधोनुं आर्श्चयजनक स्वरूप आलेख्युं छे। अहीं आपणे ते कृतिनो सार जोता पूर्वे तेनी पृष्ठभूमिका जोईशुं।

कथापृष्ठभू -

"लग्नने बीजे दिवसे ज संयमग्रहण करवानी अनुमति आपवी" तेवी माता-पिता साथे शरत करी लग्न करता जंबूस्वामी लग्ननी प्रथम रात्रे ज्यारे पोतानी ८ पत्नीओ साथे पोताना शयनखंडमां रह्या छे त्यारे त्यां चोरी करवा माटे आवी पहोंचेला प्रभव चोर वडे अवस्वापिनी विद्या द्वारा सहुने निद्राधिन कराया। जो के जंबूस्वामी पर ते विद्यानो प्रभाव न थयो उलटु कुमारना पुण्यप्रभावथी ते चोरो त्यां ज स्तंभित थया। कुमारना आवा प्रभावथी अंजायेला प्रभव चोरे कुमार पासे मित्रतानी साथे स्तंभिनी तथा मोचिनी ए बे विद्याओनी मांगणी करी अने तेना बदलामां अवस्वापिनी तथा तालोद्घाटिनी नामनी बे विद्याओ कुमारने भेट आपवा जणाव्युं। तेना उत्तरमां जंबूकुमारे ज्यारे प्रभवने पोताना सर्व संसारत्यागनी वात करी त्यारे ते सांभळी आश्चर्यचकित थयेला प्रभव द्वारा जंबूकुमारने "आवी रिद्धि-सिद्धिनो, प्रियतमाओनो तथा माता-पितादि स्वजनोनो त्याग ते शा कारणथी करे छे?" तेवो प्रश्न कराता जंबूकुमार वडे संसारना संबंधोनुं स्वरूप आलेखती जे कथा कहेवाई ते कथा एटले ज "१८ नातरानी कथा"।

कथासार-

कुबेरसेना मथुरानगरीनी सुप्रसिद्ध गणिका छे। एकवार तेणीने कोई पुरुषना संसर्गथी गर्भ रह्यो। प्रथमवारनो गर्भ होई तेने न हणवो तेवी ईच्छाथी ते स्त्री गर्भने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पोषवा लागी। अंते गर्भकाळ पूरो थये तेणीए एक सुंदर पुत्र-पुत्री युगलने जन्म आप्यो तथा मातृवात्सल्यने कारणे थोडा दिवस ते बाळकोनो उछेर पण कर्यो। त्यारपछी एक दिवस पोताना व्यवसायनी मर्यादाने लीधे माताना आग्रहथी तेणीए ते बन्ने बाळकोने "कुबेरदत्त" तथा "कुबेरदत्ता" ए नाम लखेली वींटी साथे लाकडानी पेटीमां मूंकी यमुनाना जळमां वहाव्या।

यमुनाना अगाध जळमां वहेती ते बन्ने पेटीओ पुण्ययोगे शौर्यपुरी नगरीना किनारे पहोंची। अहीं प्रातः कार्य माटे नीकळेला नगरना बे श्रेष्ठिओए नदीमां तणाई आवती ते पेटीओ जोई अर्ध-अर्ध भाग वहेंची लेवानी बोली साथे नदीमांथी बहार काढी। लाकडानी ते पेटीओ उघाडता ज तेमां नवा जन्मेला पुत्र-पुत्री युगलने तथा तेमना नामांकित वींटीओने जोई नक्कि आ बन्ने भाई-बहेन हशे एम विचारी एक अपुत्रीया शेठे पुत्रने तथा बीजा शेठे पुत्रीने ग्रहण करी।

काळांतरे अभ्यासादिथी निवृत्त थयेला ते बन्ने बाळको परणवा योग्य जणाता पूर्वना संबंधने विसरी गयेला ते बन्ने शेठ वडे परस्पर लायक ते बन्ने पुत्र-पुत्रीनो विवाह संबंध प्रयोजायो। तेवामां एक दिवस अचानक (सोगठाबाजी रमी रहेला) ते दंपतिमांथी कुबेरदत्तनी वींटी (उछळी कुबेरदत्तानी पासे पडी। ते वींटी) जोई पोतानी वींटी साथेना तथा पोताना नामनी साथेना साम्यने विचारी कुबेरदत्तने पोताना भाई तरीके जाणी कुबेरदत्ता खूब ज दुःखी थई। तेणीनी वात जाणी तथा पोताना माता-पिता पासे जई ते अंगे पृच्छा करता कुबेरदत्तानी वात साची जणाता कुबेरदत्त पण पोताना अपकृत्य प्रत्ये दुःखी थयो। अंते दुःखी थयेला ते बन्ने त्यांथी छूटा पड्या। कुबेरदत्ताए वैराग्यवासित थई पोताना दुष्कृत्यनुं प्रायश्चित्त करवा संयम मार्ग स्वीकार्यो। ज्यारे कुबेरदत्त त्यांथी व्यापारार्थे मथुरा नगरीमां गयो। अहीं कुसंगथी वासित थयेलो कुबेरदत्त वेश्यावाडे जई चड्यो। तेमां'य अजाणता ज ते पोतानी माता कुबेरसेनामां आसक्त थयो अने तेने ज पत्नि बनावी भोगो भोगवता तेने तेणी थकी एक पुत्रनी पण उत्पत्ति थई।

आ बाजु वैराग्यवासित थयेली कुबेरदत्ताने उत्तम चारित्रना बळे अवधिज्ञाननी प्राप्ति थई। एकवार ज्ञानबळे तेणीए पोताना भाईने पोतानी माता पर ज आसक्त थयेलो जोयो। अज्ञातपणे पण अकार्यमां रक्त एवा पोतानी माता तथा भाईने प्रतिबोध पमाडवा माटे गुरुणीनी आज्ञा लई साध्वी कुबेरदत्ता मथुरा नगरीमां पधार्या। अहीं तेओ कुबेरसेनानी ज वसति(घर)मां स्थान याचीने रह्या।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समयज्ञ साध्वीजी भगवंते तेओने सीधो ज उपदेश न आपता कुबेरसेनाना बाळकने हुलरावता, हालरडा संभळावता संसारना स्वरूपनी तथा पोताना, कुबेरदत्तना, माता कुबेरसेनाना १८ प्रकारना सगपणो कही संभळावता। (तेनुं सामान्य वर्णन नीचे आप्युं छे) साध्वीजी भगवंतना मुखेथी आवा असमंजस भर्या वचनो सांभळी कुबेरदत्ते ज्यारे तेमने ते संबंधो अंगेनी स्पष्टता करवा कह्युं त्यारे साध्वीजी भगवंते तेमना त्रणेयना जीवननी सघळी घटना कही संभळावी तथा तेनी प्रतीति रूपे (माताए पेटीमां मूंकेल) तेओनी स्वनामांकित वींटी पण काढी देखाडी। साध्वीजी भगवंतना मुखेथी पोताना द्वारा थयेली भूल सांभळता कुबेरदत्त तथा कुबेरसेना खूब ज दुःखित थया अने प्रायश्चित्त करवा माटे तत्पर थया। आम साध्वीजी भगवंतना उपदेशथी प्रतिबोध पामी धर्मआराधनामां उद्यमवंत थयेलो कुबेरदत्त दीक्षित थयो अने उग्र-तपाराधना द्वारा काळधर्म पामी देवलोक पाम्यो। ज्यारे माता कुबेरसेना व्रत पालन करवा द्वारा श्राविका जीवन उजमाळ करवा लाग्या।

१८ नातरानुं वर्णन

साध्वी कुबेरदत्ताए बाळकने पोतानी साथे कहेला ६ नातरा

१. दीयर - तुं मारा पतिनो भाई होय मारो **दीयर** थाय।

२. भाई- तुं मारी मातानो ज पुत्र होई मारो **भाई** थाय।

३. पुत्र- तुं मारी शोक्यनो पुत्र होई मारो **पुत्र** पण थाय।

४. पौत्र- तारा पिता मारी शोक्यना पुत्र होई तुं मारो **पौत्र** थाय।

५. काका- तुं मारी माताना पतिनो भाई होवाथी मारो **काको** थाय।

६. भत्रीजो- तुं मारा भाईनो पुत्र होई मारो **भत्रीजो** पण थाय।

साध्वीजी भगवंते बाळकने पोतानी माता(कुबेरसेना) साथे कहेला ६ नातरा

१. माता- मने जन्म आपनार तेणी मारी **माता** थई।

२. वड माता- मारी माताना पतिनी माता होवाथी तेणी मारी **वड माता** पण थई।

३. पुत्रवधू- मारी शोक्यना पुत्रनी पत्नि होवाथी मारी **पुत्रवधू** थई।

४. सासू- मारा पतिनी माता होवाथी तेणी मारी **सासू** पण थई।

५. धरणीय(भाभी?)- मारा भाईनी पत्नी होवाथी तेणी मारी **भाभी** थई।

६. शोक्य- मारा पतिनी बीजी पत्नि होवाथी मारी **शोक्य** पण थई।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साध्वीजी भगवंते बाळकने पोताना भाई (कुबेरदत्त) साथे कहेला ६ नातरा

१. पिता- मारी मातानो पति होवाथी ते मारा **पिता** थया।

२. पितामह (दादा)- मारा पतिना भाईना पिता होवाथी ते मारा **दादा** थया।

३. भाई- मारी ज मातानो पुत्र होवाथी ते मारा **भाई** थया।

४. ससरा- मारा पतिनी माताना वर होई ते मारा **ससरा** थया।

५. पति- मारी साथे तेमना लग्न थया होई ते मारा **पति** थया।

६. पुत्र- मारी शोक्यना पुत्र होवाथी ते मारा **पुत्र** पण थया।

कृति परिचय तथा कृतिसार-

प्रस्तुत कृति उपरोक्त कथाने आवरी लेती विवाहलो संज्ञक रचना छे। विवाहलाना स्वरूप तथा साहित्य माटे घणा नामांकित विद्वानोना लेखो मळे छे तेथी अहीं ते अंगे अमे कशुं न लखता संपादित कृतिनो ज सामान्य परिचय आलेखशुं।

पांच ढाळमां विभाजित थयेली प्रस्तुत कृतिनी प्रथम ढाळनी पीठिकामां कृतिकारे मंगलाचरण करता जिनेश्वरदेवने तथा 'मां' सरस्वतीने नमस्कार करी त्यारपछीना पद्योमां अनुक्रमे कुबेरसेनानी नगरीनी वर्णनाथी शरू करी तेने थयेली पुत्रोत्पत्तिनी, ते युगलना परित्यागनी, शौरीपुरीमां शेठने ते युगल प्राप्त थयानी अने परस्पर पाणिग्रहण नक्की करायानी विगतो आलेखी छे। काव्यनी त्यारपछीनी प्रथम ढाळमां कविए लग्न बाद ओचिंता ज ते युगल वडे स्वनामांकित मुद्रिका जोवाता मनमां थयेला उहापोहनी तथा कर्मनी विचित्रता वर्णवी छे।

अजाणता ज थयेला पापथी वैराग्यवासित कुबेरदत्ताना चारित्रग्रहणनी तथा भाईने प्रतिबोधन करवाना उद्देशथी पोतानी पासे ज साध्वीजी वडे ते मुद्रिका सचवायानी वात त्यारपछीनी ढाळना पूर्वार्धमां कवि वर्णवे छे। तो तेना उत्तरार्धमां कवि व्यवसायार्थे मथुरा जई मातामां आसक्त थयेला कुबेरदत्तनुं चरित्र अवधिज्ञानथी जाणी तेने प्रतिबोधित करवा विहार करी मथुरा पधारेला साध्वीजीनी वातो संक्षेपमां रजू करे छे।

हवे पछीनी २ ढाळो संसारना वैविध्यसभर संबंधोने वर्णवती ढाळो छे। ज्यारे साध्वी कुबेरदत्ता कुबेरसेनाना पुत्रने हालरडा संभळावे छे त्यारे तेने संसारनुं स्वरूप समजावता तेणी पोते कया-कया संबंधे ते बाळक साथे, कुबेरदत्त साथे तथा कुबेरसेना साथे जोडाई छे तेनुं ओछा पण सरळ शब्दोमां करायेलुं वर्णन आ बन्ने ढाळोमां जोई

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शकाय छे। काव्यनी त्यारपछीनी ढाळ साध्वी कुबेरदत्ता पासे पेली असमंजस भरी वातना रहस्यने समजवा जता पोताना ज अपकृत्यने माटे दुःखी थई प्रायश्चित्त करता कुबेरदत्त तथा कुबेरसेनानी वर्णनानी छे। अहीं ढाळांतमां कविए भव्यजीवोने उद्देशीने शील तथा संयमने विशे उद्यम करवानी प्रेरणा आपी स्वनामोल्लेखपूर्वक स्वगच्छनी वर्णना करता काव्यनुं समापन कर्युं छे।

कृतिकार

कर्ता हीरानंदसूरिजी १५मी शताब्दिना उत्तरार्धमां थयेला सुप्रसिद्ध कवि छे। तेओ पिप्पलगच्छना आचार्य वीरदेवसूरिजीना शिष्य आचार्य वीरप्रभसूरिजीना शिष्य छे। जो के तेमना जीवनचरित्र संबंधी कोई उल्लेख ध्यानमां नथी परंतु तेमणे प्रस्तुत कृति सिवाय पण (१) वस्तुपाल तेजपाल रास (२) विद्याविलास पवाडो (३) कलिकाल रास (४) जंबूस्वामी विवाहलो (५) स्थूलिभद्र बारमासा जेवी नानी-मोटी ८-१० जेटली कृतिओ रची होवानी नोंध जोवा मळे छे।

१८ नातरानी कथाना साहित्यना व्याप अंगे-

आगळ आपणे जोई गया तेम प्रस्तुत कथा जंबूस्वामी चरित्रमां रहेली अवांतर कथा होई जंबूस्वामीना जीवनचरित्र पर स्वतंत्रपणे रचायेला संस्कृत-प्राकृतादि भाषाना प्रायः दरेक विस्तृत ग्रंथमां आ कथा आलेखाई हशे ज।

उपरोक्त उल्लेख सिवाय पण प्रस्तुत कथावस्तुने लई अन्य कविओए पण स्वतंत्रकृति रूपे ढाळ, सज्झायादि द्वारा प्रस्तुत कथानो प्रचार-प्रसार कर्यो छे। मळती नोंध मुजब हर्षविजय, ऋद्धिविजय, जयनिधान, नयविजय, नारायण, देवविजय, भवान के भवानदास, महिमाप्रभ, लब्धिचंद्र, वीरसागर, हीरकळश, हेतविजय, धर्मदास, रूपविजय, कर्मसिह तथा शुभविजय शिष्य (अज्ञात) जेवा १६ कविओए १८ नातरा पर विविध सज्झायादिनी रचनाओ करी छे। ते रचनाओना संदर्भनी विशेष नोंधो माटे विविध भंडारो तपासवा पडे।

कृति संपादन अंगे

प्रस्तुत कृतिनुं संपादन मुंबई-श्रीगोडीजी पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडारनी एकमात्र हस्तप्रतथी करायुं छे। जो के संपादित कृतिनी अन्य नोंधोनो के हस्तप्रतोनो क्यांय उल्लेख मळतो न होवाथी ज एक प्रतथी संपादन करवुं पड्युं छे। जै.गु. कविओ के मध्यकालिन साहित्य सूचि जेवा ग्रंथोमां पण कृतिकार हीरानंदसूरिजीनो कृति परिचय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आलेखता आ कृति अंगे कशो दिशानिर्देश करायो नथी। कृतिनुं आलेखन १६मी शताब्दिना पूर्वार्धमां थयेलुं होवानुं कल्पी शकाय छे। सामान्य अशुद्धिओ छोडी दईए तो कृति एकंदरे शुद्ध छे। जो के अन्य प्रत मळे ते अंगे चोक्कस कही शकाय।

प्रान्ते संपादनार्थे प्रस्तुत हस्तप्रतनी झेरोक्ष नकल आपवा बदल श्रीगोडीजी जैन ज्ञानभंडार-मुंबईना व्यवस्थापकश्रीनो खूब खूब आभार।

अढार नातरानो विवाहलो

॥ढि०॥ पणमिअ जिणवर तिहुअण-सरि, समरीअ सरसति सामिणी ए।
अढार नात्रां[१] तणु म(सु)णि विचार, करम-विशेषिं जिम हूउं ए ॥१॥

जंबूय दीवहि **मथुरा** मझारि, **कुबेरसेना** गणिका तिहां वस[इ] ए।
तीणइ जनम्युं युगल नर-नारि, दिवस अग्यार प्रतिपालिउं ए ॥२॥

घातीअ[२] मूंद्रडी मनह उच्छाहि, नाम-सहित कर बिहुं तणइ ए।
कुबेरदत्त कुबेरदत्ता मंजूसमाहि, **यमना** नदीय प्रवाहीआं ए ॥३॥

रयणी-अंतरि[३] पुहरि चियारि[४], नदी-जल-पूरिं ताणीआं[५] ए।
सोरीपुर वस[ति[६]]नइ दूआरि[७], दिणयर ऊगतइ आवीआं ए ॥४॥

आवता देखी बेऊ सेठि, बोलिं विहिंची लीजसि ए।
काढी सेठिं दीधी द्रेठि[८], नर नारी विहिंची लीयां ए ॥५॥

दिनि दिनि वाधइ ए रूपि सोभागि, सयल कला बे सीखीयां ए।
नात्रां मिलिआं करम-विभागि, बहिनि भाई अजाणतां ए ॥६॥

॥ ढाल -१॥

बिहुं जण हूउ वीवाहो, धवल मंगल उच्छाहो।
हाथ-मेलावउ[९] कीधउ, दक्ष बिहुं कर लीधउ ॥७॥

परणी पुहुतां आवासि, मूंद्रडी निरखि उल्हासि।
देखि सरीखां नाम, बिहुं जण हूउ विराम ॥८॥

सिउं अह्मे बहिनर[१०] भाई, हूईअ अकह[११] सगाई।
पूछुअ आपणुं तात, जाणीय पूरव वात ॥९॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[धिग्] धिग् करम विचार, भाईय बहिनि भरतार।
करमि किसिउं[१२] नवि थाए, विण भोगवि(वी?)आं नवि जाए ॥१०॥

करिमह(रमिहिं) सरिसह[१३] प्राण[१४], कोइ म करिस्यु जांण।
करमिं तीथंकर जीतां, वीरह प्रमुख वदीता[१५] ॥११॥

करमिहिं नरवर नडीयां, सुर नर पन्नग घडीयां।
करमह(मिहिं) कोइ न दूरि, भणइ **हीराणंदसूरि** ॥१२॥

॥ ढाल-२ ॥

इम वयरी(रा)गिहिं पूरीयां, बोलइ अथिर संसार।
जीवीअ[१६] योवन कारिमां, लेसिउं संयमभार ॥१३॥

वहूइं वर मोकलावीउ, जणणी सरिसु तात।
संयम लीधउ रसि भरि, मेह्ली मोहनी वात ॥१४॥

साथिहिं लीधी मूंद्रडी, प्रीय प्रतिबोधवा रेसि[१७]।
संयम पालइ महासती, विहरइ देसि विदेसि ॥१५॥

तातहिं नंदन बूझविउं, मेह्ली घरनुं भार।
अन्न[१८] दिवस मथुरा गयुं, मंडइ बहु विवहार[१९] ॥१६॥

करम विशेषिं तसु हूउ, पूरव जणणि-संभोग।
कुबेरसेना पुत्र जाईउ, विसमु[२०] करम संयोग ॥१७॥

कुबेरदत्ता बंधव चरी[२१], जांणि अवहिनाणि[२२]।
मथुरा गई महासती, गरु आदेस प्रमाण ॥१८॥

कुबेरसेना [1]पो(पा?)सहि[२३] रही, मांगीअ वसहि विसाल।
हीराणंदसूरि इंम भणइ, रहावइ[२४] रुदन करंतु बाल ॥१९॥

॥ ढाल –त्रीजउ(३) ॥

बाल तूं मझ[२५] प्रिय[२६] बंधवूं ए, **देवर** नात्रइ ए तीणइ तूं हालर हूलरां ए।
नात्रां सुणिन[२७] अढार तुं, निउंछणां[२८] नित करूं ए ॥२०॥ बाल...(आंचली)

जणणीय एकजि आपणी ए, सहोदर **बंधव** नाणि तूं हालर... ॥२१॥ बाल...

---

1. अहिं पोसहिनो अर्थ "पौषधशाळामां" एवुं विचारी शकाय खरुं ?

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माहरी सुकि[२९] जनमीउ ए, तीणइ नात्रइ **पुत्र** तूं हालर... ॥२२॥ बाल...

तुझ पिता मझ सुकि नंदनूं ए, **पु(पउ?)त्र**[३०] तूं मझ वच्छ तुं हालर... ॥२३॥ बाल...

माहरी माइ[३१] वर बंधवू ए, **पीत्रीउ**[३२] तूं तिणइ होइ तूं हालर... ॥२४॥ बाल...

बाल तउं मझ [बंधव] नंदनूं ए, **भत्रीजउ** कारणि [जोइ?] तूं हालर... ॥२५॥ बाल...

॥ ढाल -४ ॥[1]

जणणी ताहरी माहरी ए, उदरि धरि(री)आं नव मास तूं हालर... ॥२६॥ बाल...

जणणीय **वर माडली**[३३] ए, पामीय मझ तुझ मात तूं हालर... ॥२७॥ बाल...

माहरी सुकि सुत कामिणी ए, ताहरी मात मझ **वहूअ** तूं हालर... ॥२८॥ बाल...

माहरा वर तणी माडली ए, **सासूअ** होइ तूझ मात तूं हालर... ॥२९॥ बाल...

घरणीय मझ सहोदर तणी ए, तूं**(भो)जायु**[३४] तिणि मझ होइ तूं हालर... ॥३०॥ बाल...

॥ ढाल – (?) ॥

सुकि मझ जणणीय ताहरी ए, माहरा वर तणी घरणि[३५] तूं हालर... ॥३१॥ बाल...

मझ जणणी तणु वरू ए, ताहरु माहरु **तात** तूं हालर... ॥३२॥ बाल...

माहरु प्री(पी)त्रीयु तुझ पिता ए, तिणइ **पितामह** एह तूं हालर... ॥३३॥ बाल...

माहरु ए **सहोदरू** ए, एकइं उदरि ऊपन्नउ[३६] तूं हालर... ॥३४॥ बाल...

माहरा वर जणणी वरू ए, **ससरू** तिणइ मझ तात तूं हालर... ॥३५॥ बाल...

ताहरइ पिता मझ कर ग्रहिउ ए, तुझ पिता मझ **भरतार** तूं हालर... ॥३६॥ बाल...

माहरी सुकिनउ नंदनूं ए, **नंदन** मझ तुझ[३७] तात तूं हालर... ॥३७॥ बाल...

॥ ढाल -५ ॥

अढार इस्यां सुणी विपरीत, कुबेरदत्त चमकीउ ए।
कुबेरदत्ता प्रिया सहित इक्कचिंति[३८], पूछइ आदि महासती ए ॥३८॥

---

1. अहीं लहिया वडे ढाल एवुं लखायुं होवा छतां अहींथी आगळनी ढालनी देशी के आंकणी बदली न होवाथी अहींथी नवी ढाल शरू थती जणाती नथी.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तीणइ संभारीय पूरव वात, मुद्रा रयण दिखाली(डी){लि}[उ] ए।
कुबेरदत्त बु(बू)झीउ करम-संघाति[३९], छेदवा हूउ ऊतावलु ए ॥३९॥
आपणइ चर(रि)तिहिं लाजीउ ए, चिंति निश्चल संयम आदरइ ए।
संयम पालीय पूरव रिषि रीति, हुं(हू)[उ] कुबेरदत्त सुर वहू[४०] ए ॥४०॥
कुबेरसेना लीइ समकित शील, पालइ ए निश्चल मन करी ए।
कुबेरदत्त शिवरमणी लीण, भोगवइ भवभय निरजणी[४१] ए ॥४१॥
इणी परि नात्रां सुणीय अढार, करमह विसम गति ओलखउ ए।
कूडउ[४२] कारिमु विषय व्यापार, सीयल संयम मन रंजवइ[४३] ए ॥४२॥
पींपलि(ल)गच्छि श्रीहीराणंदसूरि, भविअण आगलि इम कहइं ए।
अवर सवे मोह मेहलु[४४] दूरि, धरमसिउं मोह निश्चल करु ए ॥४३॥

॥ इति श्री अढार नात्रां वीवाहलु समाप्तः ॥

शब्दकोश

१. नातरा, सगपण, २. नाखी, ३. रात्रीमां, ४. चार, ५. ताण्यां, ६. वसति (नगर) ना, ७. द्वार पासे, ८. दृष्टि, ९. हस्तमेळाप, १०. बहेन, ११. न कही शकाय तेवुं, १२. शुं, १३. सदृश(?), १४. प्राणी, जीव, १५. प्रसिद्ध, १६. जीवन, १७. ने माटे, १८. अन्य, १९. व्यापार, २०. विषम, २१. चरित्र, २२. अवधिज्ञानथी, २३. पो(पा)सहि = पासे, २४. राखे, २५. मारा, २६. पति, २७. सांभळ, २८. ओवारणा, २९. शोक्य, उपपत्नि, ३०. पउत्र-पौत्र, ३१. माता, ३२. काको, ३३. दादी(?) ३४. भोजाई, ३५. पत्नि, ३६. उत्पन्न थयुं, ३७. तारा, ३८. एक चित्त, ३९. कर्म समुदाय, ४०. वह्यू-वह्या = चाल्या, ४१. परास्त करी, जीती, ४२. खोटुं, ४३. खुश करे, ४४. मूंकी.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साधुरंग मुनि कृत

दयाछत्रीसी

हिरेनाबेन अजमेरा

दया धर्मनो प्राण छे, आधार छे, दया धर्मनी माता अने दया ज शास्त्रोनो सार छे। समस्त व्रतोमां पहेलुं व्रत अहिंसा, दानमां पण पहेलु अभयदान आम सर्वत्र अहिंसानी प्रधानता जोवा मळे छे। ते विनानी धर्मक्रिया, उपासना के आराधनानुं कोई महत्त्व नथी रहेतुं। दया विषे अत्यार सुधीमां अनेक ग्रंथो लखाई गया, देशी पद्य रचनाओ पण घणी बधी थई छे। ते संदर्भेनी घणी रचनाओ प्रकाशित छे तो हजुय घणी अप्रगट पण छे। तेमांथी एक अप्रगट अने दया विषयक विविध दृष्टांतोना उल्लेख साथे बोधगम्य होवाथी कंईक विशिष्ट कही शकाय तेवी कृतिनुं अत्रे संपादन करवामां आवी रह्युं छे।

कृति परिचय

३६ गाथाबद्ध तथा दया विषयक कृति होवाथी कृतिनाम दयाछत्रीसी सार्थक थाय छे। कृतिनी भाषा मारुगुर्जर छे। रचनास्थळ अमदावाद छे अने रचनावर्ष सं. १६८५ छे। आ कृतिनी प्रथम बे पंक्तिमां ज संपूर्ण कृतिनो सार जणाई आवे छे। आ कृतिनुं संपादन करवानो हेतु दयाधर्मनो मर्म समजाववानो छे। दयाने धर्मनुं मूळ मानवामां आवे छे। जे पुण्यशाळी आत्मा दयाधर्मने पाळे छे ते आ भव अने परभवमां सुखी थाय छे। सर्वांग सुंदर निरोगी इन्द्रिओवाळो देह, दीर्घायु अने यशनो भागी बने छे। जेटला पण जीवो मोक्षने पाम्या छे, पामे छे अने पामशे ते बधा ज दयाना प्रतापे ज अनंत सुखना अधिकारी बने छे। दयानी आ प्रकारनी विशेषताओनो मात्र उपदेश ज नहीं पण तेनी साथे प्रचुर मात्रामां सचोट उदाहरणो पण कृतिकारे टांक्यां छे। आ दृष्टांतोमां शांतिनाथ, मेघकुमार, मेतारज मुनि, संजय राजा, अर्णिकापुत्र आचार्य, बलदेव, पार्श्वनाथ भगवान, राजा हेम, महाराजा कुमारपाल, याकिनीमहत्तरासुनु हरिभद्रसूरि, वरदत्त मुनि, दामन्नक, हरीबल माछीमार, धर्मरुचि अणगार आदि १५ थी वधु उदाहरणोनो समावेश थाय छे।

जे जीवहिंसा करे छे, ते दुर्गतिमां जाय छे, दरिद्रताने नोंतरे छे वगेरे जीवहिंसाना कष्टदायी फळ बाबते पण कर्ताए निर्देश कर्यो छे। संसारसागरने तरवामां जहाज समान जयणाने जणावनारी प्रस्तुत कृति वाचकोने विशेष प्रिय थई रहेशे ए ज आशा छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्ता परिचय

आ कृतिना कर्ता खरतरगच्छीय साधुरंग मुनि छे। एमना गुरु सुमतिसागर, दादागुरु उपाध्याय पुण्यप्रधान अने परदादागुरु आचार्य जिनचंदसूरि हता। साधुरंग मुनिए सं. १६८६मां सत्यछत्रीसीनी रचना पण करेल छे। आ बे कृतिओ सिवाय एमना द्वारा रचित अन्य कोईपण कृति मळती नथी। साधुरंग नामना एक बीजा विद्वाननी माहिती पण कोबा ज्ञानभंडारमां मळे छे, जेमना द्वारा रचायेल २४ जिन स्तवन अने आदिजिन स्तवन नामथी बे कृतिओ प्राप्त थाय छे। आ बन्ने रचनाओ ए ज साधुरंगनी छे के अन्य कोई साधुरंगनी छे तेनो कोई आधार प्राप्त थतो नथी।

प्रत परिचय

प्रस्तुत प्रत आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर कोबामां क्रमांक ८८३१५ पर उपलब्ध छे। आ प्रतनी लंबाई २६ से.मी. अने पहोळाई ११ से.मी. छे। एक पत्रमां १२ पंक्तिओ अने दरेक पंक्तिमां ३७ अक्षरो छे। सामान्य अक्षरमां लखायेल आ प्रतमां विशेष पाठ गेरु लाल रंगथी अंकित करेल छे । प्रतिलेखक विशे कोई चोक्कस माहिती मळती नथी। आ प्रतना पाठांतर माटे आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर कोबामांथी ज प्राप्त थयेल क्रमांक ११११८नी प्रतनो उपयोग करवामां आवेल छे। आदर्श प्रत क्रमांक ८८३१५ ने 'क' संज्ञा अने पाठांतर माटे लेवायेल प्रत क्रमांक ११११८ ने 'ख' संज्ञा आपवामां आवी छे। बन्ने प्रतमांथी शुद्ध पाठने संपादनमां स्थान आपेल छे।

दया छत्रीसी

ॐ॥ दयाधरम मोटो जिनसासन, भाख्यो[1] श्री भगवंत जी।
ईहभवि परभवि सुखीया थास्यें, जे पालें पुन्यवंत जी ॥१॥ दयाधरम०...

संजम लेई त्रिकरण[3] सूधें, जुओ[2] षटजीवनिकाय जी।
जावजीव लगे रखवालें, जो नीग्रंथ कहाय जी ॥२॥ दयाधरम०...

श्रावक पिण जयणा अधी(धि)कारी, देखो सास्त्र विचार जी।
जांणी त्रसजीव हिंसा टाली, एहवा[3] अक्षर सार जी ॥३॥ दयाधरम०...

सुरपति नीरुपम सुख भोगवता, मरण न वांछे तेम जी।
असुचिमांहि रह्यो जिम कीटक, चाहें आतम खेंम जी ॥४॥ दयाधरम०...

1. ख. भाखो, 2. क- जो, 3. ख. ए दया,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचारंग प्रमुख सी(सि)द्धांत में, सुत्र अरथ अधिकार जी।
गणधर देवें पर उपगारें, गुंथ्यां[२] बहु प्रकार जी ॥५॥ दयाधरम०...

शांतिनाथ जीवे पूरवभव, साहस निज मनि आंणि जी।
करुणा [4]थै[३] राख्यो पारेवो, निज तनु दांनि प्रमांणि जी ॥६॥ दयाधरम०...

हाथी भवि ससलो उगार्यो, पीडा न आणी[5] मन्न जी।
मेघकुंमार पुरव भव देखी, हरख्यो वीर वचन्न जी ॥७॥ दयाधरम०...

अट्ठोतरसो जव नीरखंता, कौंच गलंता जांणि जी।
मेतारीज मुंनीवर नव दाख्या, राख्या व्रतपचखांण जी ॥८॥ दयाधरम०...

अभय अभय सुणि **संजती** राजा, क्षत्रिय वचन रसाल जी।
घणा[6] जीवनी हिंसा करतो, दोड्यो[7] भवदूह[४] भालि जी ॥९॥ दयाधरम०...

गंगामांहि पडतो राखो, जीवदया परिमाण[8] जी।
अन्नीकासुत[9] आचारज[10] पोहतो[11], ततखिण शिवपुरी ठांम जी ॥१०॥ दयाधरम०...

करुणाइं काजो उधरता, [12]अवधिग्यान उपन्न जी।
गुरुमुख ए द्रष्टांत सुंणीनें, साधुतणो धन्नधन्न जी ॥११॥ दयाधरम०...

बालक माता [13]पासे देखी, करुणां आंणी चीत्त जी।
श्री [14]**बलदेव** रया वनवासें, पशुपंखीया मीत्र जी ॥१२॥ दयाधरम०...

पारसनाथ परमेसर परतख[15], कीधो कमठ धीकार जी।
टलवलतो[16] बलतो अहि[५] काढ्यो, संभलाव्यो नवकार जी ॥१३॥ दयाधरम०...

राजनगर राजा **हेम** नामे[17], चाल्यो तिर्थे जात जी।
वाटें[६] हीरण चोर यती मार्यो, वोलाव्या कहें वात जी ॥१४॥ दयाधरम०...

काली **कनकरथ** कापालिक[18] जीवदया प्रतीपाल जी।
कीधा जेणे ते जग जाणे, **भीमसेन**[19] दयाल जी ॥१५॥ दयाधरम०...

करुणा कन्या जेणें परणी, **कुमारपाल** राजान जी।
अती हें सुंदरवर सुख पाम्या, ऐ ऐ फल परधान जी ॥१६॥ दयाधरम०...

---

4. ख. करुणाइं, 5.क – नाणी, 6. ख – बहु, 7. क – तेड्यो, 8. क- परमाण, 9. ख – अर्णिकसुत
10. क – आचारिक, 11.ख – दुहतो, 12. क – अवीधन्यान, 13. क – पासो, 14. क- ऋषी,
15. क- परतिखि, 16. क – लवलवतो, 17. क – लामे, 18. क – कापीलका, 19. क – भेंमसेन,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरिभद्रसूर बोध[20] आकरष्या^७, चउदसेंचोमाल[21] जी।
आर्या याकनी देखि अकारीज, परचाव्या^८ ततकाल जी ॥१७॥ दयाधरम०....

वरदत्त साध मनसूधइं राख्यों, ईर्यासुमति विवेक जी।
देवपरीक्षा बहुपर कीधी, मूक्यो तोहि[22] न टेक जी ॥१८॥ दयाधरम०...

पूरवभव[23] उगार्या पहिलो[24], मछ पड्या जे जाल जी।
ए व्रत राखी थयो **दामन्नक**[25], पाम्या सुख सुविसाल[26] जी ॥१९॥ दयाधरम०...

जाती चंडाल वणारसि वासी, थयो नांमें **जमपास**[27] जी।
जांणी प्रांणी घात नीवारी, पोहतो देव अवास जी ॥२०॥ दयाधरम०...

दुरबल **हरीबल** माछी आवी[28], वरत[29] करी गुरु पास जी।
दया प्रमांणें तिणें नव भव[30], कीधा कोड विलास जी ॥२१॥ दयाधरम०...

अचल[31] मंत्री पुत्रीनी दासी, कंकणनें वीरतांत[32] जी।
दया दीपावी कर्म खपावी, लाधा सुख अनंत जी ॥२२॥ दयाधरम०...

कडुओ तुंबो वोरावीयो[33], श्री **धर्मरुचि** अणगार जी।
प्रांणी बहूवीध हंसा जांणी, कीधो आप आहार जी ॥२३॥ दयाधरम०...

भय अनेक अछें इम प्रांणी, मरण थकी भयभ्रांत जी।
एम वीचारी पर उपगारी, हिंसा केम करंत जी ॥२४॥ दयाधरम०...

हिंसा करतो दुरगत जाएं, भव अनंता पाय[34] जी।
सोग वीयोग संताप सदाई[35], दारिद्र आवें धाय जी ॥२५॥ दयाधरम०...

जीव आप स्वारथें बेठो[36], नव जाणें पर पीड जी।
धन्य तके संसार पराइ, जे भाजें भयभीड[37] जी ॥२६॥ दयाधरम०...

परगट पंचे दांन सुणीजें, तिणि माहि परधान जी।
सीवगति कारण पहिलो दाख्यो, अभयदांन बहूमांन जी ॥२७॥ दयाधरम०...

---

20. क- वीधी, 21. ख – चउदसहस्रहसचुआल, 22. ख - मुकतो नही, 23. ख – माछीभव, 24. क – बहुवीध, 25. ख- दामेनग, 26. ख - सुजस विसाल, 27. ख- जमपाल, 28. क – आछी, 29. क – वीरतें, 30. क - नव नव, 31. ख- अबला, 32. ख – वरतंत, 33. क – बोहरीआव्यो, 34. ख - दोभोगी वली थाय, 35. ख – सब्भहि, 36. ख - स्वारथ सुखरातो, 37. क – भडभीड,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एकवार परजीव विराधक, दुख पांमें दस बार जी।
नीस्चय[38] केवल भगवंत जांणें, ए जांणो वेवहार जी ॥२८॥ दयाधरम०...

रोस विसेषें सत्रने[39] लेखें, मरण लहें संसार जी।
सहस[40] लाख एक कोडा कोडी, गुणता[41] वली अधिकेरी वार जी ॥२९॥ दयाधरम०...

जयणा जिन धर्म माता कही, अवर धरम सिरताज[42] जी।
संसार सायर तरवा कार्जे, जयणा जांण जिहाज जी ॥३०॥ दयाधरम०...

वाद विवादें नवि गंजाए, जीत्यो नावें दाव जी।
रुप सोभाग लहें अति रुडा, दया तणें परभाव जी ॥३१॥ दयाधरम०...

परगट[43] इंद्री पांचे थाए, रोग न आवें देह जी।
आउखुं परिपुरण पालें, दयावंत जस गेह जी ॥३२॥ दयाधरम०...

[44]हें(हिं)सा टाली सूधो पाली, चारीत्र नीरतिचार जी।
सीद्ध थया वली थाए थास्यें, ए करणी अनुसार जी ॥३३॥ दयाधरम०...

दया छत्रीसी इणी पर दाखी, साखें राखी संघ जी।
[45]सरदहज्यो[९] भविअण मनमांहि, साचो ए शिवपंथ जी ॥३४॥ दयाधरम०...

श्री जिनचंदसूरी शीष्य गीरुआ, पुन्य प्रधान उवझाय जी।
सुमतिसागर[46] तसु सीस सीरोमणी, पामी तास पसाय जी ॥३५॥ दयाधरम०...

साधुरंग मनरंगे बोले[47], आतम पर उपगार जी।
संवत सोल पंचासी वरसे, अमदावाद मझारि जी ॥३६॥ दयाधरम०...

॥इति श्री दयाछत्रीसी संपूर्ण: थीरादनगरे सूभवारे लिपीकृता श्री॥ छ

शब्दकोश

१. करण, करावण, अनुमोदन ए त्रण करण, २. रच्यां (सूत्रबद्ध कर्या), ३. थई, ४. भवदुःख, ५. सर्प, ६. मार्गमां, ७. आकर्ष्या, ८. चेतव्या, ९. स्वीकारजो.

❋ ♦ ❋

38. ख – नीसें, 39. ख – इउने, 40. ख – सकल, 41 क. गुण, 42. क – सिरतास, 43. ख – परवडा, 44. ख – हंसा, 45. ख – सदहयो, 46. क – सुमतिसाध, 47. क – दय साधुरंगे मन बोलें.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योगविद्यानुं अजवाळुं : एक विरल घटना

पद्मश्री डॉ० कुमारपाल देसाई

योगनिष्ठ आचार्य बुद्धिसागरसूरीश्वरजीनुं जीवन एक अद्भुत जीवन हतुं। तेमना जीवनमां योगीत्व, साधुत्व, कवित्व अने वक्तृत्व देखाय छे। अवधूतनी मस्ती अने करुणासागरनी दिल-दिलावरी नजरे पडे छे। कवि, तत्त्वज्ञ, वक्ता, लेखक, विद्वान, योगी, अवधूत, एकलवीर एम अनेक सरिताना संगम बुद्धि-अब्धि (बुद्धि-सागर)मां थता जोवाय छे।

गुजरातना कवि न्हानालाल एमने 'जनम जोगंदर' अने 'अलखना अवधूत' कहीने संबोधता हता। तेओ स्वयं आचार्य बुद्धिसागरसूरीश्वरजीनी जयंतीना उत्सवमां विजापुर आव्या हता, त्यारे एमना योगीपदने आलेखता कवि न्हानालालना शब्दोनो आजे पण प्रतिध्वनि संभळाय छे। एमणे कह्युं हतुं:

"साबरमतीनां नीर, एनो सुंदर तीरप्रदेश, हरियाळा डुंगरा, अने मातानी गोद जेवी गुफाओ (ओंघा) अने तेनी वच्चे बेसी 'सोहं' ना जाप जपतो आ जोगी अद्भुत लागे छे। मनना मेल टळ्या छे, दिलना डाघ गया छे, देहनां अभिमान गयां छे। बाळुडो जोगी जाणे रमणे चड्यो छे। अद्भुत छे एनी ए रमतो !"

आवा महान योगी बुद्धिसागरसूरीश्वरजी विशेनी एक विरल घटना 'भावनगर समाचार' साप्ताहिकना नीडर तंत्री श्री जयंतिलाल मोरारजीए एमनां स्वजीवनमां अनुभवी हती। श्री जयंतिलालभाई देशी राज्यना सर्वप्रथम सामयिकना तंत्री हता। प्रतिष्ठित गुजराती साहित्य परिषदना मंत्री हता अने शिष्ट, संस्कारपूर्ण अने उपयोगी माहिती अने स्वानुभवो आलेखतुं 'भावनगर समाचार' साप्ताहिक चलावता हता। एमणे अनुभवेलो आचार्य बुद्धिसागरसूरीश्वरजी विशेनो प्रसंग जोईए त्यारे एक सवाल पण जागे के आजे जैनसमाज एनी योगविद्याथी केटलो बधो दूर चाल्यो गयो छे !

एक दिवस जिज्ञासाथी 'भावनगर समाचार'ना तंत्री श्री जयंतिभाईए १३० जेटला ग्रंथोना सर्जक योगनिष्ठ आचार्य बुद्धिसागरसूरीश्वरजीने योगविद्यानुं प्रमाण आपवा कह्युं।

आचार्य बुद्धिसागरसूरीश्वरजी ध्यान अने योगमां डूबेला रहेता हता, एटलुं ज नहीं पण एमणे योगविद्या विशे उत्कृष्ट ग्रंथो लख्या हता। आवा महान योगीराज पासे योगविद्या छे, एनी खातरी आपवा माटे श्री जयंतिभाईए उत्सुकता प्रगट करी, परंतु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्काळ तो महाराजश्रीए कशो उत्तर आप्यो नहीं। पण एक-बे महिना पछी तेमणे जयंतिभाईने एक दिवस कह्युं, "मारे बहार जवुं छे, तो आपणे फरवा निमित्ते साथे जइये, दोढ बे-कलाकमां सांज पहेलां पाछा आवीशुं"

बन्ने जण गाम बहार नीकळी एकाद माईल जेटले दूर एक निर्जन खेतरमां पहोंच्या अने पछी बंने एक झाड नीचे बेठा। आचार्यश्री बुद्धिसागरसूरिजीए कह्युं, "जयंतिभाई, तमे बे एक महिना पहेलां योगनो प्रत्यक्ष प्रभाव जाणवानी इच्छा बतावेली। आ स्थळ तेने माटे अनुकूळ छे। आजे तेनो प्रयोग तमारी सामे करी बतावीश। तेमां कोई चमत्कारिक घटना बने तो तमारे मूंझावुं के भय पामवुं नहि।"

श्री जयंतिभाईए कह्युं, "आपनी हाजरीमां मारे मूंझावानुं के भय पामवानुं कशुं कारण नथी। आप खुशीथी प्रयोग करो।"

योगनिष्ठ आचार्यश्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजीए कह्युं, "थोडी स्पष्टता करुं। जेनुं दिल साबूत होय तेवा जिज्ञासुने ज योगनी प्रक्रिया बतावी शकाय, कारण के योगनी क्रिया ते प्रयोग करनार माटे क्यारेक जोखमरूप होय छे अने क्रिया जोनार गभराई जाय छे।"

जयंतिभाईए फरी वखत खातरी आपी के पोते भय पामशे नहीं अने मूंझाशे नहीं। महाराजश्रीए प्रयोगनो प्रारंभ कर्यो। ते पहेलां सूचना आपी के : "आ प्रयोग करती वखते मारुं शरीर शववत्, साव जड अने लाकडां जेवुं सखत थई जशे। शरीरनुं हलनचलन, श्वासोच्छवास अने नाडीतंत्र बंध पडी जशे, तेथी तमने एम पण लागशे के मारुं मृत्यु थयुं छे, परंतु खरेखर मृत्यु थशे नहीं, पण प्राणशक्ति ब्रह्मरंध्रमां केन्द्रित थशे। आ स्थिति केटलो समय राखवी ते मारी इच्छाशक्ति उपर आधारित छे।

मारी संकल्पशक्ति प्रमाणे आ योगनो समय हुं अगाउथी नक्की करुं छुं, छतां योगनी प्रक्रियानी अधवच्चे तमारूं मन भयभीत थाय अथवा कशी दहेशत जेवुं लागे, तो तमे मारा कान पासे मोढुं राखी तद्दन धीमा अवाजे कानमां ओम् मंत्रनो उच्चार करजो एटले मारी चेतना पाछी मूळ स्थितिमां आवशे, बहारना जगत साथे मारो संपर्क सधाशे अने तमारी भाषा प्रमाणे हुं पाछो शुद्धिमां आवी जईश।"

योगनिष्ठ आचार्य बुद्धिसागरसूरीश्वरजीए जमीन पर चत्ता सूई जई शवासन कर्युं। श्वास जोरथी अंदर खेंची लीधो। तेमनुं शरीर तंग थवा लाग्युं। हाथ-पग तथा शरीरना जे भागो शिथिल हता, ते अक्कड थवा लाग्या। आखुं शरीर सीधुं सपाट थई गयुं। हाथ तथा पगनां आंगळा साव सीधा थई गया। मोढानी नसो खेंचाई सख्त थई

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गई। जाणे तेओ मृतावस्थामां पहोंची गया।

जयंतिभाईए महाराजश्रीनी नाडीओ जोई, हृदय पर हाथ मूक्यो, नाक उपर हथेळी मूकी तो नाडीओ बंध, हृदयना धबकारा स्तब्ध अने श्वासोच्छवासनी क्रिया बिलकुल नहि।

थोडीवार थई त्यां आचार्यश्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजीनुं चतुपाट पडेलुं शरीर अक्कड अने सपाट स्थितिमां, जमीनथी जाणे अध्धर, कोई पण जातना आधार वगर ऊंचकातुं होय तेवी भ्रांति थवा लागी आ द्रश्य जोई जयंतिभाई गभराई गया।

तेमना मनमां आ बधुं जोई भयनो आछो संचार थवा लाग्यो। बीजो भय ए लाग्यो के योगक्रियामां कंई क्षति रही जतां महाराजश्रीनुं अहीं एकांत अने निर्जन स्थानमां क्यांक आकस्मिक मृत्यु थई जाय तो पोते केवी विपरीत दशामां मुकाई जाय ! जैन समाज अथवा लोको पोताना माटे केवा तर्कवितर्क करे? तेमना मृत्यु माटे पोताने ज जवाबदार गणे तो पोतानी शी स्थिति थाय?

आवी शंका-कुशंका थतां ते खूब भयभीत बनी गया, अने महाराजश्रीनी सूचना याद करी तेमना कानमां धीमे धीमे ओमकारनो जाप शरू कर्यो।

थोडीवारे आचार्यश्री बुद्धिसागरसूरिजीए आंखो ऊघाडी, त्यारे जयंतिभाईनो जीव हेठो बेठो। तेमणे जयंतिभाई सामे जोई, हसीने आळस मरडी शरीरने बेठुं कर्युं ते वखते आचार्यश्री बुद्धिसागरसूरिजीना शरीरमांथी एटलो बधो परसेवो छूट्यो के तेमनां तमाम कपडां भींजाईने लथपथ थई गया।

जयंतिभाईए कह्युं, "महाराजश्री, कृपा करी आवो योगनो आ प्रभाव बीजा कोईने बतावशो नहि!" जयंतिभाईने लाग्युं के जाणे हुं पोते ज मृत्युना मुखमांथी पाछो आव्यो छुं।"

योगनिष्ठ आचार्यश्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजी महाराजना आवा केटलांय प्रसंगो एमना अंतेवासीओए नोंध्या हता। हकीकतमां एनी पाछळ एमनी योगविद्यानी साधना प्रगट थाय छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राचीन पाण्डुलिपियों की संरक्षण विधि

राहुल आर. त्रिवेदी

(गतांक से जारी...)

List of Equipments

1. स्प्रे बॉटल
2. वाश बॉटल
3. बीकर 1000 एम.एल. 500 एम.एल. 200 एम.एल. 100 एम.एल.
4. Acetone बोटल
5. मेजर सिलेंडर
6. मैग्नीफाइंग ग्लास
7. Rod (कांच की छडी)
8. फनिल (कुप्पी)
9. ग्लास जार
10. स्माल नेक/बडा नेक (प्लास्टिक बॉटल)
11. लेम्प
12. ड्रायर
13. प्लास्टिक बॉटल (ब्राउन)
14. कटिंग मेट
15. ग्लास टेबल टॉप
16. इंडक्शन स्टोप
17. हाइड्रोमीटर
18. मेजर इन टेप
19. ट्रांसपेरेंट टेप - 1इंच 2इंच
20. पेपर टेप
21. वीकर कवर पेपर
22. टेफलान पट्टी लकडी पट्टी

स्टेशनरी

1. शॉफ्ट ब्रुश - 25, 50, 75, 100 एम.एम.
2. पेपर कटर
3. स्केपल- पेपर काटने हेतु
4. ट्यूजर (फोरसेप)
5. पी.एच. इंडीकेटर
6. स्पेचूला (अलग प्रकार के)
7. स्वेविस्टिक
8. स्केल 4 पीस (बडा व छोटा)
9. टेस्ट ट्यूब
10. टेस्ट ट्यूब स्टेंड
11. वॉटर कलर
12. स्टिक पेपर
13. प्लास्टिक ड्रापर
14. स्कूयजी
15. स्माल/बडी ट्रे
16. ब्लॉटिंग पेपर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

17. स्टेपलर, पिन सहित
18. पंचिग मशीन
19. Two वेस्टिक टेप ½, 1, 2 इंच
20. मलमल कपडा
21. मैटल छन्नी
22. पी.एच. स्ट्रिप
23. ग्लब्स
24. मास्क
25. ब्रुश (राउंड ब्रुश आदि सभी प्रकार की)
26. Apron टॉवेल
27. दाब मशीन
28. केमिकल फ्यूम कपबोर्ड या केमिकल रेक्स
29. ड्राइंग रेक
30. वर्किंग चेयर
31. वर्किंग स्टूल
32. आलमारी (रेक वाली)
33. रेड कॉटन क्लॉथ
34. चूने का पैकिट
35. मैट
36. वैक्यूम क्लिनर
37. 4 बाई 6 की 2 सेंट्रल टेबल रेक सहित
38. एक ऊनी कंबल रूंएदार
39. गोरेटेक्स पेपर
40. टेप सभी प्रकार के
41. काँच की प्लेट (छोटी-छोटी)
42. लेब कोट

पेपर नाम

1. जापानी टिश्यू पेपर 9 जी.एस.एम.
   5 जी.एस.एम. 3.8 जी.एस.एम.
2. लोकता पेपर, जी. 10 लोकता पेपर
3. ए.4 साईज पेपर
4. ब्लोटिंग पेपर
5. मेलिनिक्स सीट (पोलिस्टर शीट)

इन आवश्यक एवं अपेक्षित सामग्रियों के द्वारा उपचारात्मक संरक्षण किया जाता है।

उपचारात्मक सफाई मुख्यतया दो प्रकार से होती है- १) एक्वास(Aqueous) क्लिनिंग व २) केमिकल (Chemical) क्लिनिंग.

१) पानी से सफाई (Aqueous Cleaning)

पाण्डुलिपियों का परीक्षण करने से पहले उसकी अम्लीयता(एसिड) की मात्रा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की जाँच की जाती है। इसके लिए pH पेपर का प्रयोग किया जाता है। उस पेपर पर 1 से 14 तक अंक दिए होते हैं, जो पाण्डुलिपियों में एसिड का स्तर प्रदर्शित करता है। एसिड की मात्रा 1 से 7 के बीच में आती है तो Acidic माना जाता है और 7 से अधिक हो तो Alkaline कहा जाता है। एसिड की मात्रा अधिक होने से हस्तप्रतों को गंभीर क्षति पहुँचती है।

पाण्डुलिपियों को अलग-अलग प्रक्रियाओं के द्वारा एसिडमुक्त किया जाता है, उसे Deacidification कहा जाता है। कागज पाण्डुलिपियों डिएसिडीफिकेशन करने हेतु डिस्टील वॉटर में चूने का पानी मिलाकर उस पानी से हल्के ब्रुश से उसे साफ किया जाता है, जिससे उसे केल्शियम और मेग्नेशियम कार्बोनेट प्राप्त होता है। इस प्रक्रिया से पाण्डुलिपि की गुणवत्ता व आयु बढ जाती है।

(क्रमशः)

(अनुसंधान पृष्ठ-७ से)

क्रम	पृष्ठ सं.	गाथा	अशुद्धपाठ	शुद्धपाठ
१७	३५	४४(४६)	काय फल	कायफल
१८	३६	५०(५२)	वधु आभला	वथुआ भला
१९	३६	५१(५५)	मुझ नइ	मुझनइ
२०	३६	५१(५५)	पीपलि मिर्च	पीपलिमिर्च
२१	३६	५४(५६)	अकल करओ	अकलकरओ
२२	३६	५४(५६)	पंचकुलि जण माण	पंच कुलिंजण माण
२३	३७	५६(५८)	ए लीया	एलीया
२४	३७	६२(६४)	हुइ मूसलू	दुइ मूसलू
२५	३७	६७(६९)	नाम सुप्रेम	नामसु प्रेम
२६	४०	१७	जीवाण ही	जी वाणही
२७	४३	१३	आधमइ	आध मइ
२८	४५	२५(२६)	बे करीओ कूरीवाल	बेकरीओ कूरी वाल
२९	४६	३१(३३)	एकमण	एक मण
३०	४६	३१(३३)	सातधात	सात धात
३१	४६	३५(३७)	आदेसनइ	आदेस नइ
३२	४६	३५(३७)	सावद्यनइ	सावद्य नइ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

डॉ. हेमन्तकुमार

पुस्तक नाम - प्राचीन जैन स्मारकों का रहस्य, **कर्ता**-श्री कान्तिसागरजी, **पूर्व संपादक**- डॉ. लक्ष्मीचंद्र जैन, **संपादक व संशोधक**-श्री भूषण शाह, **पूर्व प्रकाशक**-भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी, **पुनः प्रकाशक**-मिशन जैनत्व जागरण, अहमदाबाद, **प्रकाशन वर्ष**-वि.सं. २०७६, **भाषा**-हिन्दी, **विषय**-जैन धर्म के उज्ज्वल इतिहास की महिमा का विवेचन किया गया है।

शायद किसी को यह प्रश्न हो सकता है कि स्मारकों-खंडहरों-गुफाओं आदि का वर्णन जिस ग्रंथ में हो उससे समाज या व्यक्ति को क्या लाभ? इस संबंध में इतना ही कहना उचित होगा कि यह उस उज्ज्वल इतिहास की ही महिमा है कि अनादिकाल से चला आ रहा जैन धर्म आज भी अविरत अपनी गति से चलते हुए अपना अस्तित्त्व बनाए हुए है। इस अवधि में न जाने कितने देशी-विदेशी आक्रमण-झंझावात आए और गए।

खरतरगच्छ के पूज्य मुनिराज श्री सुखसागरजी महाराज के शिष्य पूज्य श्री कान्तिसागरजी महाराज ने स्वयं प्राचीन जैन स्मारकों एवं खंडहरों को देखा, उसका निरीक्षण किया और उसके महत्त्व को समझा। साधु जीवन भ्रमणशील होता है और पूज्यश्री ने साधु जीवन के इस गुण का उपयोग पुरातत्त्व सामग्री देखने तथा संकलन करने में व्यतीत किया और इसका संपूर्ण लाभ आज समाज एवं इतिहास प्रेमियों को प्राप्त हो रहा है। पादविहारी होने के कारण उन्हें वैसे-वैसे स्थान पर भी जाने का सुअवसर मिला जहाँ वाहन विहारी का जाना शायद सम्भव नहीं हो पाता। दृष्टिसम्पन्न व्यक्ति जहाँ जाता है, उसे अपने विषय की सामग्री सहजरूप से उपलब्ध हो ही जाती है।

कला और शोधपरक अभिरुचि होने के कारण पूज्यश्री अपने विहार मार्ग में आने वाले प्राचीन खंडहरों एवं पुरातन स्थलों को अनिवार्य रूप से देखते, कभी-कभी तो मार्ग से अन्दर कई मील तक जाना पड़ता तो भी वे अवश्य जाते। वहाँ जो भी सामग्री उनकी दृष्टि में आती उसकी संपूर्ण सूचना संकलित करते, जिसका परिणाम प्रस्तुत पुस्तक है।

वे लगभग ईस्वी सन् १९३० से १९५५ के मध्य महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार आदि अनेक प्रांतों के गाँव-गाँव, शहर-शहर भ्रमण किया था। इस अवधि में उन्होंने अनेक खंडहरों, खंडित मूर्तियों को देखा जो जीर्ण-शीर्ण अवस्था में थे। इस विषय में उनकी रुचि बाल्यावस्था में ही जगी थी जब वे अपनी जन्मभूमि जामनगर के दुर्ग में अपने विद्यालय का समय व्यतीत किया करते थे। उन्होंने लिखा है कि मैं बाल्यावस्था में विद्यालय की अवधि में विद्यालय नहीं जाकर सीधे खंडहर में पहुँच जाता था और वहीं अन्य सहपाठीयों के साथ अपना समय व्यतीत कर संध्या समय घर पहुँच जाता था।

पुरातत्त्वविद् पूज्य श्री कान्तिसागरजी महाराज ने अथक परिश्रम करके प्राचीन जैन स्मारकों एवं खंडहरों का विवरण संकलित किया था। इतिहास प्रेमियों के लिए यह वरदान स्वरूप है। पूज्यश्रीजी ने अपने संकलन को **"खंडहरों का वैभव"** एवं **"खोज की पंगदंडीयाँ"** नामक अलग-अलग दो ग्रंथों के रूप में संग्रहित किया था और उसे भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी से लगभग ४० वर्ष पूर्व प्रकाशित करवाया था।

इस पुस्तक को पढने से यह ज्ञात होगा कि जैनियों के मन्दिर और उसमें स्थापित बड़ी-बड़ी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूर्तियाँ आज उस स्थान पर जैनों के नहीं रहने के कारण किस अविनय दशा को प्राप्त हैं। इस पुस्तक में प्राप्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि एक समय संपूर्ण भारतभर में जैनों का प्रभाव चारों ओर फैला हुआ था। इस बात का प्रमाण आज भी प्राचीन खंडहर, स्मारक और वृक्षों-लताओं से घिरे जीर्ण-शीर्ण जिनमंदिर दे रहे हैं। यह पुस्तक हमें यह भी बताता है कि हमारा इतिहास कितना उज्ज्वल था और आज क्या स्थिति है।

यह पुस्तक पुराजिज्ञासुओं, विद्वानों, संशोधकों आदि के लिए बहूपयोगी है। आज का समाज, इतिहास व पुराप्रेमी तथा आनेवाली पीढी पूज्यश्री के इस अनुपम कार्य से अनभिज्ञ न रहे, इस हेतु से पूज्य श्री कान्तिसागरजी महाराज के द्वारा पूर्व में पुरातत्त्व पर जो भी कार्य किया गया था, उसे श्री भूषण शाहजी ने एकत्र करके पुनः संपादित एवं संशोधित कर एक ही पुस्तकरूप **"प्राचीन जैन स्मारकों का रहस्य"** नाम से प्रकाशित करवाया है।

इसका प्रकाशन तथा छपाई भी बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक किया गया है। परिश्रम पूर्वक उपयोगी सूचनाएँ परिशिष्ट मे दी गई है।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर परिवार का सौभाग्य है कि श्री भूषण शाहजी ज्ञानमंदिर के ग्रंथों का सबसे अधिक उपयोग करने वाले विद्वानों में से एक हैं। श्री शाहजी भविष्य में भी इसी प्रकार उपयोगी ग्रंथों का संपादन करते रहें, और समाज के समक्ष बहुमूल्य रत्न उपस्थित करते रहें। उनके इस कार्य की अनुमोदना के साथ धन्यवाद।

❋ ♦ ❋

श्रुतसागर अप्रैल-मई संयुक्तांक २०२०मां खंभातनी गझल कृति साथे आपेल गझल साहित्यनी सूचिमां जे गझलना आदिपद-श्लोक प्रमाण प्राप्त थया न हता तेवी ३ तेमज अन्यत्र अप्राप्य ३ गझलोनी सूचि पूर्ति.

क्रम	ग्रंथनुं नाम	कर्ता	गाथा	आदि पद	नोंध
९	उदयपुर की गझल	भोज	-	समरु देवि सरसती कि	प्रेस मेटरमां मारी पासे
२५	जोधनगर की गझल	-	५४	गढ जोधांण अति भारीक्	प्रेस मेटरमां मारी पासे
४९	मेडता की गझल	-	४९	मरुधर देश अति मोराक्	प्रेस मेटरमां मारी पासे
६७	सोझत वर्णन गझल	रूपेंद्र	६०	मरुधर देश देशांमोड	प्रेस मेटरमां मारी पासे
६८	जोधपुर वर्णन गझल	मनरूप	१००	समरु मनसुध सारदा	प्रेस मेटरमां मारी पासे
६९	जालोर गढ की गझल	गुलाल कवि	९३	सुंडाला सिद्ध बुद्ध करणा	विजयगच्छ जैनशाला भंडार-राधनपुर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योगनिष्ठ परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरजी महाराजा के समुदाय के श्रमण भगवंत के चातुर्मास की सूचि

१. सकल श्रीसंघ के हितचिंतक परम पूज्य **तपागच्छाधिपति आचार्यदेव श्री मनोहरकीर्तिसागरसूरीश्वरजी महाराजा** व पूज्य आचार्यदेव श्री उदयकीर्तिसागरसूरिजी, पूज्य मुनिवर्य श्री विद्योदयकीर्तिसागरजी महाराज साहब आदि श्रमण भगवंत
श्री परिमल श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, जैन उपाश्रय, तुलसीबाग क्रोसिंग रोड, आनंद मंगल बिल्डींग के सामने, परिमल, आंबावाडी, अहमदाबाद, गुजरात

२. **राष्ट्रसंत परम पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा,** पूज्य आचार्यदेव श्री अमृतसागरसूरिजी, पूज्य आचार्यदेव श्री अरूणोदयसागरसूरिजी, पूज्य आचार्यदेव श्री विवेकसागरसूरिजी, पूज्य गणिवर्य श्री प्रशान्तसागरजी महाराज साहब आदि श्रमण भगवंत
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा (गांधीनगर) गुजरात – ३८२४२६

३. परम पूज्य **आचार्यदेव श्री वर्धमानसागरसूरिजी** महाराज साहब व पूज्य गणिवर्य श्री कल्याणपद्मसागरजी महाराज आदि श्रमण भगवंत
श्री राजस्थान जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, २९२, रंगाई गाउडर स्ट्रीट, कोयंबतूर-६४१००१ तमिलनाडु

४. परम पूज्य **आचार्यदेव श्री विनयसागरसूरिजी** महाराज साहब आदि श्रमण भगवंत
श्री भवानीपुर मुर्तिपूजक जैन श्वेताम्बर संघ, ११, हैसामरोड, भवानीपुर, कोलकाता-७०००२० (प.बंगाल)

५. परम पूज्य **आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागरसूरिजी** महाराज साहब आदि श्रमण भगवंत
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन श्वे. मू. संघ, श्री सलोत जैन आराधना भवन, नं.२९-३४, ५८वां क्रॉस, 4th ब्लोक, राजाजीनगर, बेंगलूरु-५६००१०

६. परम पूज्य **आचार्यदेव श्री हेमचंद्रसागरसूरिजी** महाराज साहब आदि श्रमण भगवंत
श्री अभिनव जैन संघ, रत्नत्रयी धाम, २५, आशापूरण सोसायटी, अंबाजी मंदिर के पास, डी.केबीन, अहमदाबाद. (गुज.)

७. परम पूज्य **आचार्यदेव श्री प्रसन्नकीर्तिसागरसूरिजी** महाराज साहब आदि श्रमण भगवंत
श्री पुनितधाम जैन तीर्थ, ग्रामभारती, विजापुर-महुडी रोड, गांधीनगर-३८२७३५. (गुज.)

८. परम पूज्य **आचार्यदेव श्री अजयसागरसूरिजी** महाराज साहब आदि श्रमण भगवंत
श्री पुष्पदंत श्वेतांबर मुर्तिपूजक जैन संघ, वासुपूज्य बंगलोझ, रामदेवनगर, सेटेलाईट, अहमदाबाद-३८००१५. (गुज.)

९. परम पूज्य **आचार्यदेव श्री विमलसागरसूरिजी** महाराज साहब व गणिवर्य श्री पद्मविमलसागरजी महाराज आदि श्रमण भगवंत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री जैन श्वेतांबर संघ, इरोड, तमिलनाडु

१०. परम पूज्य **आचार्यदेव श्री अरविन्दसागरसूरिजी** महाराज साहब आदि श्रमण भगवंत
श्री पार्श्वनाथ जैन श्वे. मू. संघ, ४८, अन्ना मलाई, पोंडिचेरी-६०५००१.

११. परम पूज्य **आचार्यदेव श्री महेंद्रसागरसूरिजी** महाराज साहब आदि श्रमण भगवंत
श्री कुंथुनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट, श्रीनगर, बेंग्लोर

१२. परम पूज्य **गणिवर्य श्री नयपद्मसागरजी** महाराज साहब आदि श्रमण भगवंत
श्री जैन संघ, मलाड वेस्ट, मुंबई

१३. परम पूज्य **गणिवर्य श्री अमरपद्मसागरजी** महाराज साहब आदि श्रमण भगवंत
श्री वासुपूज्यस्वामी जैन श्वे. मंदिर, श्री जैन संघ ट्रस्ट, २, मदल नारायण स्ट्रीट, मैलापुर, चेन्नई-६००००४.

१४. परम पूज्य **पर्यायस्थविर श्री नीतिसागरजी** महाराज साहब आदि श्रमण भगवंत
श्री सीमंधरस्वामी जैन मंदिर पेढ़ी, स्टेट हाईवे, महेसाणा

१५. परम पूज्य **मुनिप्रवर श्री शांतिसागरजी** महाराज साहब आदि श्रमण भगवंत
श्री स्फूलिंग पार्श्वनाथ जैन देरासर, समाधि मंदिर, विजापुर (उ.गुजरात)

१६. परम पूज्य **मुनिवर्य श्री विश्वोदयकीर्तिसागरजी** महाराज साहब आदि श्रमण भगवंत
श्री वासुपूज्यस्वामी जैन संघ, श्री गुलाब जैन पौषधशाला, हवाला गली, भेरूचोक, सुमेरपुर, जिला-पाली (राजस्थान)

योगनिष्ठ परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरजी महाराजा के समुदाय के श्रमणी भगवंत के चातुर्मास की सूचि

१. पूज्य **साध्वी श्री पुण्यप्रभाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री विश्व मैत्री धाम – बोरीज, गांधीनगर (गुजरात)

२. पूज्य **साध्वी श्री मयणलताश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
पूज्य साध्वी श्री तत्त्वगुणाश्रीजी म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री महुडी (मधुपूरी) जैन तीर्थ – महुडी (गुजरात)

३. पूज्य **साध्वी श्री धर्मरत्नाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
आंबलीपोळ – अहमदाबाद

४. पूज्य **साध्वी श्री सुनयनाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री सीमंधरस्वामी जैन मंदिर पेढ़ी, स्टेट हाईवे महेसाणा

५. पूज्य **साध्वी श्री रम्यगुणाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री महुडी धर्मशाळा, पालीताणा

६. पूज्य **साध्वी श्री रत्नत्रयाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
बालाजी कॉम्पलेक्ष, भायंदर, मुंबई

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७. पूज्य **साध्वी श्री ज्योतीप्रभाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री महुडी उपाश्रय, रामनगर साबरमती (गुज.)

८. पूज्य **साध्वी श्री कल्पगुणाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री भुरीबाई उपाश्रय, हीराजैन सोसायटी, रामनगर साबरमती (गुज.)

९. पूज्य **साध्वी श्री कल्पशीलाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री पुष्पदंत श्वेतांबर मुर्तिपूजक जैन संघ, वासुपूज्य बंग्लोझ, सेटेलाईट, अहमदाबाद.

१०. पूज्य **साध्वी श्री कल्याणधर्माश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री अरीहंत पार्क जैन संघ, सुमुल डेरी रोड, सुरत

११. पूज्य **साध्वी श्री पियुषपूर्णाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
दहिसर, मुंबई

१२. पूज्य **साध्वी श्री सुवर्णरेखाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री वासुपूज्यस्वामी जैन श्वे. मंदिर, श्री जैन संघ ट्रस्ट, २, मदल नारायण स्ट्रीट, मैलापुर, चेन्नई-६००००४.

१३. पूज्य **साध्वी श्री रत्नमालाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री पारसमणी सोसायटी-उपाश्रय, साबरमती, रामनगर, अहमदाबाद

१४. पूज्य **साध्वी श्री नलिनयशाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री दादा साहेब, भावनगर.

१५. पूज्य **साध्वी श्री शीलपूर्णाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, बेलगांव, कर्णाटक

१६. पूज्य **साध्वी श्री जयनंदिताश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री महुडी उपाश्रय, महावीरनगर, शंकरगली, कांदीवली, मुंबई

१७. पूज्य **साध्वी श्री मुक्तिरत्नाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
प्रहलादनगर, सेटेलाईट, अहमदाबाद

१८. पूज्य **साध्वी श्री सम्यग्दर्शिताश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री राजस्थान जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, २९२, रंगाई गाउडर स्ट्रीट, कोयंबतूर-६४१००१ तमिलनाडु

१९. पूज्य **साध्वी श्री तत्त्वतीर्थाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री कलापूर्ण श्रमणी विहार, पाटण (उत्तर गुजरात)

२०. पूज्य **साध्वी श्री मयणाश्रीजी** म.सा आदि श्रमणी भगवंत
श्री जैन संघ, मलाड वेस्ट, मुंबई.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाचार सार

कोबातीर्थ में
विश्वशान्ति हेतु बृहत् शान्तिधारा अभिषेक का आयोजन

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा तीर्थ के प्रांगण में दि. १९-७-२०२० रविवार को प्रातःकाल ९:३० बजे राष्ट्रसन्त आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब की निश्रा में विश्वशान्ति हेतु महाप्रभाविक बीजमन्त्रगर्भित, परम चमत्कारी, सर्वकार्य सिद्धिदायक, बृहत्शान्तिधारा अभिषेक अनुष्ठान का आयोजन श्रीमती कान्ताबहन रणजीतमलजी बागरेचा (जैन) परिवार के द्वारा किया गया।

गणिवर्य श्री प्रशान्तसागरजी ने बताया कि प्राचीन पूर्वाचार्य के द्वारा रचित यह स्तोत्र अत्यन्त प्रभावशाली और सिद्धिदायक है। वर्त्तमान समय में समस्त विश्व में प्रसरित कोरोना महामारी से जीवमात्र की सुरक्षा हेतु इस अनुष्ठान का आयोजन किया गया था। इस अनुष्ठान में ३३ प्रकार की विशिष्ट औषधियों, सुगन्धित गुलाबजल तथा तीर्थजल के मिश्रण से मूलनायक श्री महावीरस्वामी का अभिषेक किया गया।

क्षमा याचना

सांवत्सरिक पर्युषण महापर्व के पावन प्रसंग पर हमारे जैन-जैनेतर, देश-विदेश के विद्वान, पूज्य साधु-साध्वी एवं श्रावक-श्राविका, श्रुतसागर के वाचक, विश्वकल्याण प्रकाशन के वाचक, ग्रंथसूचि के लाभार्थी, दाता, प्रदाता, लेखक, विविध संप्रदाय, विविध संघ, विविध संस्थाएँ आदि हमसे जुड़े सभी के प्रति हमारा नम्र निवेदन है कि आपकी अपेक्षाओं को समझने में, समझने के बाद भी प्रमाद व कार्यव्यस्ततादि के कारण साहित्य भेजने में हुए विलंब, क्षति से अनपेक्षित साहित्य भेज देने के लिए, श्रुतसागर आदि के माध्यम से लेख लेने, नहीं लेने आदि के विषय में हमारे ट्रस्टीगण, व्यवस्थापक एवं कार्यकर्ताओं के द्वारा मन-वचन-काया से वर्ष दौरान जाने-अनजाने में हुए किसी भी प्रकार के अपराध व क्षति के लिए हम आप सभी के क्षमाप्रार्थी हैं.

मिच्छामि दुक्कडं

For Private and Personal Use Only

For Private and Personal Use Only

Registered Under RNI Registration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY).
Published on 15th of every month and Permitted to Post at Gift City SO, and on 20th date
of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2021.

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर स्थित कल्पसूत्र की हस्तप्रत
क्रमांक २१८९ से प्राप्त भगवान महावीरस्वामी की जन्मपत्रिका

BOOK-POST / PRINTED MATTER
प्रकाशक
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२४२६
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२
फेक्स (०७९) २३२७६२४९
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat.
And Printed at : NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and
Published at : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. Editor : HIREN KISHORBHAI DOSHI

For Private and Personal Use Only